इश्क़ फ़क़ीरी

गीता भाटिया

शब्दांकुर प्रकाशन
SHABDANKUR PRAKASHAN

इश्क़ फ़क़ीरी

ISBN : 978-93-85776-59-5

रचनाकार
गीता भाटिया

संस्करणः प्रथम (2019)
मूल्यः ₹200/-

सर्वाधिकार
लेखकाधीन

टाइपसेटिंग
रफत जहां

आवरण
के. शंकर

मुद्रक
आर्यन डिजिटल प्रेस, दिल्ली

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। लेखक की अनुमति के बिना इसके किसी भी अंग का प्रयोग नहीं किया जा सकता।

प्रकाशक
शब्दांकुर प्रकाशन
J-2nd-41, मदनगीर, नई दिल्ली 110062
दूरभाष : 09811863500
Email: shabdankurprakashan@gmail.com

शुभकामना संदेश

गीता भाटिया की किताब “इश्क़ फ़क़ीरी” एक बहता हुआ दरिया है, जिसकी मौजें मन को भिगा जाती हैं। इश्क़ का परिपक्व रूप, उसके आयाम और उसकी अभिव्यक्ति से एक ख़ूबसूरत मंज़र रचा गया है, जिसमें पाठक डूब–डूब जाते हैं। इश्क़ एक संकीर्ण सोच नहीं बल्कि खुला आसमान है, जिसे छू लेने का एक ख़्वाब रचा गया है।

आपकी किताब “इश्क़ फक़ीरी़” के लिए मुबारकबाद और आपके साहित्यिक सफ़र के लिए शुभकामनाएँ।

मीनाक्षी भटनागर, पूर्व अध्यापिका,
लेखिका, कवयित्री

शुभकामना संदेश

"इश्क़ अमीरी हो या फ़क़ीरी, ये सदियों से बदनाम है
आपकी सोच ने दिया इश्क़ को, एक नया मुकाम है
इश्क़ ही जुनून, इश्क़ ही इबादत, यही आपका फ़रमान है
कहीं ज़हर है, कहीं केसरिया, कहीं छलकता जाम है"

आज गीता भाटिया का नाम कविताओं के क्षेत्र में नया नहीं है। हम सबने इनकी लिखी सभी भावनाओं को भली–भाँति पढ़ा है और बार बार सराहा है। इश्क़ को यदि कोई समझ पाया है तो वो आप हैं। अपने पहले तीनों प्रकाशनों में इश्क़ को बख़ूबी निभाने वाली गीता भाटिया ने एक बार फिर से अपनी रचनाओं एवं कविताओं के ज़रिए इश्क़ को एक नए अंदाज़ में पेश किया है।

"आपने चार चाँद लगा दिए अपने लफ्जों की खूबसूरती में
ज़बान–ए–इश्क़ में डुबोकर लिख डाले ख़यालात इश्क़ फ़क़ीरी में"

समीर भाटिया
कवि, लेखक, शिक्षक,
संगीतकार, संचालक एवं आलोचक

अनुक्रम

इश्क़ फ़क़ीरी	:	7
इश्क़	:	8
आसमां से इश्क़	:	9
फूलों से सज रही सेज	:	11
चाँद को एहसास ही नहीं	:	12
वो ग़म जो तूने पल्लू से बांधे थे	:	13
तेरी यादें	:	14
शिकन	:	15
साँसें तेज़ हैं	:	16
याद वो आए	:	17
मेरी आँखें	:	18
रात के ख़्वाब	:	19
छू रही थी तेरी नज़रें	:	20
नसीब	:	21
चल गया वो तीर	:	22
सवाल हो जाऊँ	:	24
जलती लौ	:	25
तेरी आँखें	:	26
आँखों से बारिश	:	27
हज़ारों गुलाब	:	28
बेड़ियाँ	:	29
भरी हैं आँखें	:	30
आँसू से भरा सागर	:	31
मोहब्बत	:	33
मेरे बोल	:	34
ठिठुरती हवाएँ	:	35
मेरा साया	:	36
अधूरा ख़्वाब	:	37
भीगे नैना	:	38
निगाहें	:	39
कर लेते परहेज़	:	40
प्यार का नाम	:	41
तपती धरती पे जब बूँदें	:	42
हमने चाहा था	:	43
दिल का इशारा	:	43
इम्तिहां	:	44
आसां नहीं है	:	45
मैं और तुम	:	46
सपनों के महल	:	47
कुछ बोलो ना	:	48
कोई नज़्म मीठी सुना देना	:	49
खामोशी	:	50
तेरा आँचल	:	51
मैं आऊँ जो सपनों में	:	52
सन्नाटा	:	53
कितने आसमां सँजोए थे	:	55
मुखौटा	:	56
मेरी यादें	:	57
चाँद को गुरूर है	:	58
वक़्त की रफ़्तार	:	59
तेरे कदमों में	:	60
मैं वो नहीं	:	61

क़ातिल	:	63
ख़्यालों की कश्ती	:	64
बीते लम्हे	:	65
कातिल की नज़र	:	66
पनाह दे मुझको	:	68
ये ख़्वाब	:	69
फ़ना हो जायेंगे	:	70
इश्क़ की रूह	:	71
लगन	:	72
अल्फ़ाज़ दिल के	:	73
न जाने क्यों	:	75
कहा था ना	:	76
कड़वी यादें	:	77
नयन बोले मन सुने	:	78
जीने के अन्दाज़	:	79
आँधियाँ	:	80
ज़िंदगी के लिए	:	81
आईना जोड़ के	:	82
इश्क़ निक्कमा	:	83
रंग	:	84
वक़्त ने मुझसे कहा	:	85
दिल की आवाज़	:	86
बरसात का मौसम	:	87
चाँद रूठा है	:	88
वक़्त के धागे	:	89
ज़िंदगी	:	90
अमावस	:	91
चलना है मुझको	:	92
कुछ सपने अधूरे से	:	93
प्रेम-प्यार की नदिया	:	94
रात	:	95
खुशबू	:	96
तूफ़ान दिल में	:	97
धुआँ उठा है	:	98
ये धड़कने	:	99
तेरे कदम	:	100
आँधियाँ अन्दर हैं तो	:	101
ये सिलसिला	:	102
ख़्वाबों की दुनिया	:	103
चाँद से इश्क़	:	104
तेरी झुकती नज़रें	:	105
सावन की पहली बारिश	:	106
सहारा	:	108
इश्क़ में घायल	:	109
तमाशा-ए-सराब	:	111
सारे ग़म बह निकले हैं	:	112
इश्क़ इबादत	:	113
बिकता है जहां में	:	114
आँसू	:	115
हमराज़	:	116
अपनी ही धरती पे	:	117
गीली माटी बर्तन-सी मैं	:	118

इश्क़ फ़क़ीरी

इश्क़ फ़क़ीरी, इश्क़ है जन्नत
इश्क़ इबादत मूरत की
इश्क़ यार से दर्द भरा
रंग रँगा इक सूरत की

इश्क़ भरा ग़म का पैमाना
इश्क़ है यमला इश्क़ दीवाना
इश्क़ अश्क का छलका जाम
इश्क़ गली-गली बदनाम

इश्क़ यार ना करियो यारा
इश्क़ जो मौका दे दोबारा
इश्क़ तड़पती जीवन काया
इश्क़ बुरा अंजाम है यारा

इश्क़ ज़हर है मीठा-मीठा
इश्क़ भरम कुछ खट्टा-मीठा
इश्क़ आग का बहता दरिया
इश्क़ रंग लाल-केसरिया

इश्क़

इश्क़ हीर ने
इश्क़ शीरी ने
इश्क़ राधा ने किया
इश्क़ पाक है
फिर भी क्यों बदनाम हुआ
इश्क़ करते हैं जो कमाल का जिगर रखते हैं
डूबने तक को मझधार में चल पड़ते हैं

इश्क़ मीरा ने भी तो अपने श्याम से किया
ज़हर पी लिया और अमृत का नाम दिया
इश्क़ हैरां है पर इश्क़ वो मुकाम है
जिसको पाने के लिए मौत को भी सलाम है
इश्क़ मय में डूबा दर्द है
इश्क़ में नशे का ज़र्फ है
इश्क़ में आशिक़ दिल का ग़ुलाम है
इश्क़ नादान है पर मेहरबान है
इश्क़ में वफ़ा-जफ़ा नहीं होती
इश्क़ में कश्ती साहिल पे नहीं होती
डूब जाते हैं जो इश्क़-ए-जिगर रखते हैं
मर कर भी जीने का हुनर रखते हैं

आसमां से इश्क़

आसमां से इश्क़ है मुझको
मैं नज़र से बांध लेती हूँ

रोज़ बाहों में भर लेती हूँ
मेरी आदत है मैं रोज़ आसमां को छू लेती हूँ

ये खुला आसमां है सिर्फ़ मेरा आसमां
ये खुला आसमां है सिर्फ़ मेरा आसमां

कम ना हो जाए नज़र से नाप लेती हूँ
मैं रोज़ आसमां को छू लेती हूँ

आसमां से इश्क़ है मुझको
मैं नज़र से बांध लेती हूँ

सूरज को इजाज़त है रोज़ आने की
चाँद को इंतज़ार करा देती हूँ

ये खुला आसमां है सिर्फ मेरा आसमां
मैं रोज आसमां को छू लेती हूँ

उड़ते पंछी आ तुझे सैर करा दूँ
क्षितिज तक तुझे आ दौड़ लगा दूँ

पंखों में समेट लेना थोड़ी मस्ती
निखर आएगी थोड़ी तेरी भी हस्ती

आसमां से इश्क़ है मुझको
मैं नज़र से बांध लेती हूँ
मेरी आदत है मैं रोज़ आसमां को छू लेती हूँ

फूलों से सज रही सेज

फूलों से सज रही सेज
चलो प्रिये मनुहार करें
चंचल चितवन पावन पवन
दिल को दिल पर निसार करें

प्रेम प्रणय के फूल खिलें
आ मिले बसन्त बहार करें
मैं तुझमें हूँ तुम मुझमें हो
वीणा के सुर झनकार करें

भँवरे भँवर से डोल रहे
कानों में अमृत घोल रहे
कोयल कूक मिठास भरे
पवन सुगंध बयार बहे

पतझड़ लील गया जिनको
वो पत्ते उदास परिहास करें
नव जीवन दे गये जिनको
उनसे उल्लास की आस करें

चाँद को एहसास ही नहीं

चाँद को एहसास ही नहीं
किसी को इन्तज़ार है उसका

जब चाँदनी से नहाता है
महबूबा का चाँद सा बदन
समां महक जाता है
हज़ारों शमां जल उठती हैं
नज़्म गुनगुनाने लगती है
रूप निखर आता है
ऐ चाँद! आज जल्दी निकल आ
कोई बैठा है इन्तज़ार में
आसमां की तरफ़ आँखें गड़ाये
आज वस्ल की रात है
मेरे चाँद को इन्तज़ार है
तेरे निकलने का

वो ग़म जो तूने पल्लू से बांधे थे

वो ग़म जो तूने पल्लू से बांधे थे
आज भी छोड़ नहीं पाया
हज़ार ख़ुशियाँ आई थी राह में
मगर ख़ुद को तन्हा ही पाया

हर सूरत में तेरी सीरत नज़र आती है
शाम होते ही मेरी रुह तड़प जाती है

इस झील के आईने में देखा था तुझे
आज भी तलाश ख़त्म नहीं हुई
बला की ख़ामोशी है सब तरफ़
चाँद से बात अभी नहीं हुई
सितारों ने बांध ली हैं बारीयाँ
जलने-बुझने की अपने
आसमां सो गया है थककर
अँधेरा ओढ़े हुए
इश्क़ के इम्तिहां
अब और कितने देने होंगे
कितने सन्नाटे कितने ग़म झेलने होंगे

तेरी यादें

तेरी यादें जब साँस लेती हैं
गर्माहट बदन को छूती है
सर्द रातें भी सर्द नहीं लगती
तेरी यादें जब सुलगती हैं

ख़्वाबों का दिखा के तू मंज़र
हुस्न का चुभा के तू ख़ंजर
ज़ुल्फ़ों में लपेट लेती हो
मेरा दर्द समेट लेती हो

तेरी आँखें हैं आईना मेरा
तेरी ख़ुशबू है तरन्नुम मेरा
बिठा के तुम मुझको पलकों पे
मेरा आसमां चूम लेती हो

एहसासे-क़रीब देती हो
मेरा नसीब बदल देती हो

तेरी यादें जब साँस लेती हैं
गर्माहट बदन को छूती है
सर्द रातें भी सर्द नहीं लगती
तेरी यादें जब सुलगती हैं

शिकन

तेरे माथे की शिकन बड़ी अजीब है
लगता है तू किसी के बहुत क़रीब है
कुछ सवाल चेहरे पे उभरे चेहरे हैं
मानिंद किसी जनाब के उकेरे है
जानते हैं
कुछ सवालों के जवाब नहीं होते
या कहो जवाब तो हैं
मगर सवाल ही उलझे हैं
अक्सर माथे पे लकीरें खिंच जाती हैं
एक सिरा पकड़ो सारी ही उधड़ जाती हैं
बड़े अजीब हैं ज़िंदगी के ताने-बाने
वक़्त की डोर से बंधे हैं अफ़साने
कितनी सलवटें हैं
और कितने हैं फ़साने

साँसें तेज़ हैं

साँसें तेज़ हैं
लगता है कहीं तूफ़ान आया है
समंदर की लहरों में
कहीं उफ़ान आया है

कश्ती को किनारे आसां नहीं मिलते
डूबते को तिनके का पैग़ाम आया है
साँसें तेज़ हैं
लगता है कहीं तूफ़ान आया है

लहरों से दोस्ती
महँगी पड़ी सफ़र में
हवाओं से लड़ना अब काम आया है
साँसें तेज़ हैं
लगता है कहीं तूफ़ान आया है
समंदर की लहरों में
कहीं उफ़ान आया है

नज़रों में कैसा कोहराम आया है
साँसें तेज़ हैं
लगता है तूफ़ान आया है
समंदर की लहरों में कहीं
उफ़ान आया है

याद वो आए

बेतकल्लुफ़ बेवजह ही याद वो आए
थे नहीं अपने मगर दिल को थे क्यों भाए

ये कोना कहीं दिल में आबाद हो गया कैसे
बंजर से आशियाँ में कोई जी गया कैसे

बेतकल्लुफ़ बेवजह ही याद वो आए
रहते रहे दिल में बेवजह पनाह पाए

ये इश्क़ नहीं था फिर भी इश्क़ का मुलाज़िम था
इसका बेवजह सूली पर चढ़ना मुनासिब था

है पत्थरों को कौन पिघला सका आशिक
तराशकर इसे मूरत बनाई फिर क्या हासिल

हँसी होठों पर आते-आते जैसे रुक गई काफ़िर
ये अपना था पराया था या फिर कौन था आखिर

मेरी आँखें

मेरी आँखों ने मेरे ज़मीर को परेशान किया
नज़र उठाई किस ओर किसे हैरान किया
ये कौन है जो फ़लक ज़मीन पर ले आता है
किसकी चाहत में ये जुर्म सरेआम किया

यह बेवफ़ाई दिल की है या है नज़रों का क़ुसूर
ये किसकी बाबत था नज़रों को तमाशाई का फ़ितूर
चोट सीने में लगाई ये किसकी चाहत में
दम निकला तो निकला ये किसकी राहत में

ये फ़लक ज़मीं पर चाँद ने उतारा होगा
मेरी चाहत को मेरी नज़र किया होगा
बड़ी शिद्दत से तमन्ना थी जिसको पाने की
उसी मोहब्बत में फ़लसफ़ा लिखा होगा

रात के ख़्वाब

रात के ख़्वाब चाँद तक पहुँचे
तुम मुझे मिल गई ऐसे
चाँदनी में सुनहरे ख़्वाबों को
मिल गयी हो मंजिल जैसे

बिक जाऊँगा तेरी ख़ातिर मैं तो
क़ीमत जो तेरी आँकी जैसे
चाहत हो हूर की जैसे
मैंने चाहा है हीर को ऐसे

मेरे लफ़्ज़ रूबरू होकर
नज़्म में ढल गये ऐसे
सुर के सात रंग तुम हो
मेरी साँसो में रम गये जैसे

रात चाँदी सी चमक गयी
बला की खूबसूरत फ़िजा हो
तेरे कदमों में दिल है मेरा
या तेरी पलकों की छाँव हो जैसे

चाँद थाली में सज के आया है
रात चाँदनी में नहाई ऐसे
तेरी ज़ुल्फों की घटा बिखरी है
चाँद बदरी से निकल आया जैसे

छू रही थीं तेरी नज़रें

छू रही थीं तेरी नज़रें
मुझे बड़ी दूर से
बड़ा ज़ालिम एहसास था
इश्क़ की राह में

यादों के साए
ये रोज़ डराते हैं मुझे
कहीं तू दूर ना हो जाए
तेरी ही चाह में

फूल जो छुपाए थे कभी
ख़ुद की किताब में
उन फूलों में ख़ुशबू ढूँढ़ते रहे
तेरी ही आह में

चाहत को मंज़िलें
हासिल कहाँ हुईं
टूटे थे ताने-बाने
तेरे निकाह में

ढूँढ़ा किये तुम्हें
ना जाने कहाँ-कहाँ
छुपे हुए थे तुम यहाँ
मेरी निगाह में

नसीब

नसीब किसी का चुराऊँ
तो हासिल है क्या
फ़लक को पैबन्द लगाऊँ
तो वाजिब है क्या

नश्तर चुभो के कोई
दिल पे काबिज़ क्यों रहे
अपने ज़ख़्म दिखलाने से ही
वो क़ातिल है क्या

रहम अभी भी दिल में
बाकी है कहीं
दर्द दिया है जिसने
वो दिल में दाखिल है क्या

समझ लें इसमें भी कहीं है
खुदगर्ज़ी का आलम
या समझ लें अब कि
खुदा हाफ़िज़ है क्या

यक़ीन उन पे क्या करें
जो कभी मेरे ना हुए
तरस खाएँ उन पे तो
मुनासिब है क्या

चल गया वो तीर

चल गया वो तीर
जो आँखों से निकला था
घायल कर दिया उसने
और पानी भी ना पूछा था
सितम सह लेते उनके
गर वो मरहम लगा देती
इश्क़ की आरज़ू इधर
आग उधर भी लग जाती

चल गया जादू
ज़ुल्फ़ों का हवाओं पर
मुकम्मल जहां होता
अगर वो साथ हो जाती
सँवार देते ज़ुल्फ़ों को
अगर वो सिर झुका देती
काली घटा उधर
बरसात इधर भी हो जाती

खिल गई मुस्कान
होठों पर गुलाब सी
ना जाने किस को देखकर

मोरनी सी इठलाई
कमबख़्त दिल हाथों में ले
कुर्बान कर देते
नशे में झूम लेते हम
उन्हें पागल भी कर देते

सवाल हो जाऊँ

जुड़ के घट के सवाल हो जाऊँ
तुझमें खो के ख़याल हो जाऊँ

मैं तेरा सवाल हूँ जवाब नहीं
जुड़ना-घटना मेरा हिसाब नहीं
तुझमें खो के ख़याल हो जाऊँ
जुड़ के घट के जबाब हो जाऊँ

हम दो से चार हो जायें
तेरा गुणा और भाग हो जायें
तू मेरे रास्ते पे चल निकले
मैं तेरा मुकाम हो जाऊँ

तुझमें खो के ख़याल हो जाऊँ
जुड़ के घट के जबाब हो जाऊँ

जलती लौ

जलती लौ से प्यार हो जाए
ये मज़ाक तो नहीं
भँवर की ओर चल देना
कोई मज़ाक तो नहीं

देखे हैं कई पेड़
आँधियों से उलझते हुए
मिट्टी को छोड़ दें खुद ही
ये कोई मज़ाक तो नहीं

हवाओं का सिला ऐसा
भड़काती हैं दावानल
कोई लावा निगल जाए
ये मज़ाक तो नहीं

मालूम हो जिसको
अंजाम-ए-मोहब्बत क्या है
उसी का राख़ हो जाना
कोई मज़ाक तो नहीं

तेरी आँखें

तेरी आँखें क्या नम हुईं
अश्क़ पिघलने लगे
लबों पर बूँद-बूँद
फिसलने लगे

इश्क़ के इम्तिहां
और मुश्किल हुए
डूबकर इश्क़ में
दर्द से भर गए

वक़्त की कशमकश
और बढ़ती गई
छू के दिल को मेरे
रूह तड़पती रही

आँखों से बारिश

आँखों से बारिश अच्छी नहीं
थोड़ा बादलों को सँभाला करो
गालों की लाली कहीं धुल ना जाए
थोड़ा नूर इसका सँवारा करो

दीवानों की बातें दीवाने ही जानें
थोड़ा वक़्त अपना निकाला करो
शामों की मस्ती रातों की शोखी
कुछ वक़्त हम संग गुजारा करो

हवाओं ने थामी है तेरी महक
हम तक हवाएँ बहाया करो
होश में कब तक रहेगा दीवाना
हम पर भी बिजली गिराया करो

हज़ारों गुलाब

हज़ारों गुलाब भी कम हैं
जब तुम साथ होते हो
प्यार से दिल महकता है
जब तुम आसपास होते हो

ज़ुबां से प्यार लफ़्ज़ जब निकले
लब पे मिठास घुलती है
नैनों से शोख़ियाँ बरसती हैं
नज़र तुम्हीं पे जा के टिकती है

बेड़ियाँ

इश्क़ में सज़ा-ए-मौत सी लगती हैं बेड़ियाँ
झलक महबूब की पाने को घिस जाती हैं एड़ियाँ
हर तरफ़ दीवार बना दी ज़माने ने
इश्क़ को अंधा बना देती हैं आँधियाँ

जबकि
इश्क़ ने पत्थर को मूरत बनाया है
ख़ुदा जाने इस अंगार से दीपक जलाया है
इश्क़ में आशिक फ़नकार बनते हैं
आशिक ने 'महबूब' ख़ुदा का घर बताया है

भरी हैं आँखें

भरी हैं आँखें
तो दिल कहाँ खाली होगा
कोई तो है जिसने
आँखों को सींचा होगा

कहाँ इनकार किया
उसका वजूद हमने
कि दिल पे वार किया
कहाँ-कहाँ उसने

सँभाल रखी है
कांटो कि वो चुभन हमने
कि जिस्म तार-तार किया
जहाँ उसने

आँसू से भरा सागर

आँसू से भरा हो जब सागर
तब दर्द हिलोरें लेता है
गीली आँखें नीले सपने
ग़म हरदम तन्हा रहता है
ये दर्द की भरपाई है
ये कैसी तन्हाई है

ख़ामोशी ने धीरे-धीरे
अपने पंख फैलाये हैं
तूफ़ानों से भर के दामन
आँगन में शोर मचाये हैं
चोट जिगर ने खाई है
ये कैसी तन्हाई है

कौन सुने दिल की धड़कन
सूना-सूना सा मन-उपवन
चली ऐसी पुरवाई है
ऋतु बसंत मुरझाई है
मौसम की रुसवाई है
ये कैसी तन्हाई है

बादल बूँद-बूँद बरसे
कंठ घूंट-घूंट तरसे
प्यास हृदय की कहाँ बुझे
जाने क्यों आस लगाई है
ये सावन हरजाई है
ये कैसी तन्हाई है

अब ख़ुश्बुऐं नहीं आती उन फूलों से
जो बरसों पहले सूख गए इन किताबों में
पर महक वो ज़हन में अभी भी ताज़ा है
सपने जो पिरोये थे कभी ख़यालों में

मोहब्बत

दिल तक ये जो उतरा है
कतरा है मोहब्बत का
ज़हर भी है दवा भी है
सुकून भी है इबादत भी

ख़्वाब में आने का भी इक वक़्त होता है
तुम तो हर पल आँखों में समाए रहते हो
हर पल ये शोख़ियाँ अच्छी नहीं
तुम तो मेरी पलकों को रिझाए बैठे हो

मेरे बोल

मैंने कहा था ना मेरे बोल बड़े तीखे हैं
तुम अपने कानों में मरहम लगा लो थोड़ा

हम तो चाहते हैं सरेआम क़त्ल कर जायें
तुमको बचना है तो नक़ाब ओढ़ लो थोड़ा

बेवफ़ाई के तेरे शहर में हैं क़िस्से कितने
दाग़ आँचल में लगे हैं तो धो लो थोड़ा

वक़्त की आज़माइश पे आज हम भी उतरे हैं
तुम भी हम पे यक़ीं कर लो थोड़ा

दोराहे पे खड़े हैं अब हम जायें किधर
तुम ही आँखों से इशारा कर दो थोड़ा

ठिठुरती हवाएँ

आँखें नम तो ठिठुरती हवाओं की भी हुआ करती हैं
तभी तो ओस बन के फूलों पे गिरा करती हैं
कौन जाने ये आँसू हैं या शबनम के मोती
ये किसका दर्द लेके हवाऐं बहा करती हैं

आख़िर इन हवाओं को किस से मुहब्बत हो गई
मौसम ने इनसे कुछ कहा क्यों इनकी आँखें भर गईं
क्या चाँद इनको भा गया या ख़्वाब टूटा था कोई?
या तन्हाई के आलम में ये रात इनको खल गई?

मेरा साया

आज ख़ुद के साथ मेरा साया भी नहीं
मेरी नज़रों ने मुझे कितना अकेला पाया
मेरा अक्स ज़ोर से जो हँसा मुझ पर
वक़्त की डोर से ख़ुद को टूटा पाया

आसमां टूटते तारों का कभी हुआ ही नहीं
चाँद तक जो पहुँचा उसे गिरना ही था
चाँद भी कितना बेवफ़ा निकला
अमावस की रात उसे छिपना ही था

ऊँचाइयाँ छूना भी कोई जुर्म नहीं
पर वापस घरौंदे में आया होता
हवा में देर तक टिकना नामुमकिन है
पंछी को कुछ तो समझ आया होता

अधूरा ख़्वाब

अधूरा ख़्वाब ले उलझा रहा
ताबीर में हरदम
अधूरी दास्तां लिख दी
अधूरा ही रहा हरदम

समझने को नहीं बाकी
कहने को नहीं कुछ भी
ज़िन्दा था या मुर्दा था
मैं बिखरा रहा हरदम

रखा मिला कोने में
मेरा टूटा हुआ चेहरा
बहुत जोड़ा बहुत तोड़ा
ख़ुदी में ही रहा हरदम

आँसू में भिगोकर के
कलम हमने भी तोड़ी थी
ज़माने के निशाने पर
मैं मरता रहा हरदम

भीगे नैना

भीगे से नैना बरस रहत
साँझ हुई अब तरस रहत
कुछ ना बोले पर हौले-हौले
हैं उदास समझावत से
भरे हुए हैं सागर से
पर हैं प्यासे कुछ बादल से

अँधियारे से गलियारे में
दीप जलाये आस लगाये
पलक बिछाये फ़लक उठाये
दो नैना अब थकत रहत
पिया न आये किसे कहत
भरे हुए हैं सागर से
पर हैं प्यासे कुछ बादल से

निगाहें

तकती हैं निगाहें दूर तक
क्यों वादा भूल गया कोई
हमसफ़र सफ़र अधूरा है
क्यों पीछे छोड़ गया कोई

ख़ामोश निगाहें बोल रहीं
मन-उपवन में डोल रहीं
आस निरास भई दिल में
अखियाँ नीरस रस घोल रहीं

घर मुंडेर बन ज़ंजीरें
बढ़ते कदमों को रोक रही
सागर से भरकर अखियाँ
सावन को है तरस रहीं

उड़े नैनन नीर पखेरू बन
नमी हवा में घोल रहे
बन बादल बरसेंगे फिर
हैं बदरा काले डोल रहे

कर लेते परहेज़

कर लेते परहेज़ जीने से हम भी
अगर ये साँसें तुम्हारी न होती
ख़ुदा की कसम ज़िन्दा हम न होते
अगर ये जां तुम्हारी न होती

तेरे नर्म हाथों ने जकड़ी है बेड़ी
अब जान मेरी रिहाई है मुश्किल
ये ज़िंदगी हमको भायी न होती
दिल की लगी जो लगाई न होती

प्यार का नाम

प्यार को जब भी नाम दिया जिसने
वह दर्द बन गया दिल में
प्यार कभी जिस्म से नहीं होता
प्यार है दिल से रूह का रिश्ता

प्यार उस दर्द का एहसास है
जो किसी अपने के आसपास है
छू के निकले जो अपने की रूह को
वो हवा में घुली मिठास है

तपती धरती पे जब बूँदें

तपती धरती पे जब बूँदें
पानी की बरसा जाता है बादल
जलती धरती की प्यास
बुझा जाता है बादल

सोंधी-सोंधी ख़ुशबू
हवाओं में महक जाती है
उड़ते बादल की
हस्ती ही बदल जाती है
अब वो दर-दर नहीं भटकता
धरती के अस्तित्व में सिमट जाता है

फिर फूटती हैं कोपलें
धरती के सीने में
बसन्त-बहार बनके
खिलते हैं फूल आँगन में
तब जाके पकती हैं सारी फसलें खेतों की
न जाने कितनों के पेट भरती है ये धरती

हमने चाहा था

हमने चाहा था
सितारों से खेलना हरदम
काँच के टुकड़े थे जिगर में चुभ के रह गये

बहुत उछाले थे पत्थर
आसमां पे हमने, गिरे वापस
हमारा ही खूं कर गये

तीर निशाने पे था हमने भी वार कर दिया
ज़िंदगी भर को बस कैद हो के रह गये

दिल का इशारा

कैसे कह दें कि पता नहीं मुझे घर तेरा
कोई पूछे तो अपने दिल पे इशारा करते हैं

कदम से कदम मिलाकर चल सको तो चलो
कदम की छाप पे चलना मुझे पसंद नहीं
हमसफ़र सफ़र में बन सको तो बनो
काफ़िलों में चलना मेरी फ़ितरत में नहीं

इम्तिहां

इम्तिहां और भी अभी देने होंगे
आसमां और भी अभी छूने होंगे

कदम-कदम पत्थरों को आँकना होगा
जीतना है तो अभी और जूझना होगा

सितम ज़माने के कम ना होंगे
आग पर अभी और चलना होगा

तप के ज़ेवर बना लूं ख़ुद को
हथौड़ों को अभी और झेलना होगा

चमकना है तो रोशन तो होना होगा
हीरे को अभी और तराशना होगा

इम्तिहां और भी अभी देने होंगे
आसमां और भी अभी छूने होंगे

आसां नहीं है

आसां नहीं है
इश्क़ के पौधे का पनपना
जड़ों को इसकी
आँसू से सींचा जाता है
दर्द की खाद में
कुछ ग़म मिलाकर
फूलों को महकाया जाता है
काँटों की चुभन सहकर
फूलों को सहलाया जाता है
तब कहीं जाकर
फलता-फूलता है
इश्क़ का पौधा

आसां नहीं है
इश्क़ के पौधे का पनपना
जड़ों को इसकी
आँसू से सींचा जाता है

मैं और तुम

मैं हवाओं का हूँ झोंका
तुम घटा घनघोर हो
मैं हूँ राग इस प्रेम का
तुम रागिनी अनमोल हो

तुम शोख़ियाँ आँगन की मेरे
रौशनी जीवन की हो
बारिश में जैसे नाचती
झूमती मनमोर हो

आसमां की हो छटा
तुम फिज़ा रंगीन हो
हवा में उड़ती हो पतंग
जीवन मेरे की डोर हो

मैं हवाओं का हूँ झोंका
तुम घटा घनघोर हो
मैं राग हूँ इस प्रेम का
तुम रागिनी अनमोल हो

सपनों के महल

चल चलें कुछ देर सपनों के महल में
शहर की आँधियाँ हमें मिलने नहीं देती

आँखें खोलते ही उजाले दौड़ पड़ते हैं
नज़रों की बेबाकियाँ तुझे छूने नहीं देती
चल चलें कुछ देर सपनों के महल में
शहर की आँधियाँ हमें मिलने नहीं देती

अजीब रास्ते हैं ये सपनों के महल के
गलीचे मख़मली हैं ये रातों के महल के
न कोई घूरती नज़रें हैं न कोई आग या नफ़रत
प्यार की हवाएँ हैं दीए बुझने नहीं देती
सदाएँ ही सदाएँ हैं जुदा होने नहीं देती

चल चलें कुछ देर सपनों के महल में
शहर की आँधियाँ यहाँ मिलने नहीं देती

कुछ बोलो ना

कुछ बोलो ना
बोलते क्यों नहीं बहुत मुश्किल है
यह ख़ामोशी की भाषा
यह सही है कि इसमें सच्चाई है
लब झूठ बोल लेते हैं
आँखें झूठ नहीं बोलती
पर कभी-कभी सुनना अच्छा लगता है
कुछ झूठ ही सही

हमने तो घर भी जलाया है रोशनी के लिए
अँधेरों में ख़्वाबों की ताबीर कहाँ होती है

कोई नज़्म मीठी सुना देना

रूठूँ तो मुझको मना लेना आकर
कोई नज़्म मीठी सुना देना आकर
समझी ना होंगी जो बातें अधूरी
वही बात पूरी बता देना आकर
कोई नज़्म मीठी सुना देना आकर

लाखों दीवानों में तुम भी थे कातिल
सितारों की दुनिया में लाये थे आख़िर
अब चाँद सी दुनिया सजा देना आकर
रूठूँ तो मुझको मना लेना आकर
कोई नज़्म मीठी सुना देना आकर

रूठना तो है मेरी अदाओं में शामिल
नींदें उड़ाने में तुम भी थे माहिर
आओ तो बत्ती बुझा देना आकर
रूठूँ तो मुझको मना लेना आकर
कोई नज़्म मीठी सुना देना आकर

विरह में जोगन बनूँगी मैं तेरी
जो तू ना आया रूठूँगी तो भी
होठों से मदिरा पिला देना आकर

रूठूँ तो मुझको मना लेना आकर
कोई नज़्म मीठी सुना देना आकर
कोई नज़्म मीठी सुना देना आकर

ख़ामोशी

ख़ामोशी को भी बोलना आ गया
चुप रहके भी सब कह जाती है
ज़ुबां किसी की कुछ भी हो
सिर्फ़ लहज़े से ही समझ जाती है

प्यार की तो कोई भाषा नहीं होती
ख़ामोशी ही काफ़ी है कहने के लिए
ज़ुबां तो बढ़-चढ़कर झूठ बोलती है
सच तो एहसास है समझने के लिए

तेरा आँचल

तेरे आँचल से लिपटे सितारे
हमने आसमां में देखे थे
ये चाँद धरती पे
उतर आया कैसे

नींद आँखों में आ जाए तो
थपकी दे के सुला दे जो
मेरी बाहों के तकिए में
ये चाँद उतर आया कैसे

तेरा चाँदी सा बदन दमकता है
रोशनी से नहा आई हो जैसे
नज़र लग जाएगी तुझको
ये चाँद आसमां से
उतर आया कैसे

मैं आऊँ जो सपनों में

मैं आऊँ जो सपनों में
मुझे तुम रोकना नहीं

मैं जागूँ जो रातों में
मुझे तुम टोकना नहीं

जूगनू की तरह जलता-बुझता हूँ मैं
इक दिया सा मुझको समझना नहीं

रोशनी हूँ ख़्वाबों की तेरे
चराग़े मोहब्बत हूँ बुझता नहीं

ज़िंदगी अब तो जीने का सहारा बन जा
बहुत लड़खड़ाए हैं हम ग़मों का बोझ उठाये हुए

सन्नाटा

सब तरफ सन्नाटा है
ये पतझड़ किसी को नहीं भाता
ख़ाली रास्ते ख़ाली बैंच
रुखा-सूखा सा मौसम ठूंठ से पेड़
ये किसे छाँव देंगे
इन ख़ाली बैंचों को
इन्तज़ार है उसी सुबह का
जब सूरज का घूंघट उठते ही
किरणें दौड़ पड़ती थी
हरे-भरे पेड़ झूमने लगते थे
न जाने कितने नये-नवेले जोड़े
आकर बैठते थे बतियाते थे
हाथों में हाथ डाले वादे करते थे
ये बैंच गवाह है उन सियासतदानों का
सियासत के तानो-बानो का
जो कभी यहाँ बुने जाते थे
उन बच्चों का जो खेलते-खेलते
इन्हें फाँद जाते थे
उन ठहाकों का
जो मौसम को संजीदा बनाते थे
उन हवाओं का

जो माहौल में मस्ती घोल जाती थीं
वो दिन आयेगा
वो दिन फिर से आयेगा
बस इन्तज़ार बस थोड़ा और इन्तज़ार
उस बसन्त का जिसको आना ही होगा
जिसको आना ही होगा

कितने आसमां सँजोए थे

कितने आसमां सँजोए थे
एक-एक करके बिखर गए
हर रात जब चाँद निकलता है
न जाने क्यों आसमां
इस गहरी झील में समा जाता है
चाँद डुबकियाँ लेता है
सितारे खिलखिलाते हैं
मुस्कराते हैं
और गुम हो जाते हैं
सुबह तक कुछ नहीं बचता
आसमां ख़ाली हो जाता है
अब एक और आसमान ढूँढ़ना होगा
नया चाँद ढूँढ़ के लाना होगा
यह चाँद हर दिन झील में घुलता है
थोड़ा-थोड़ा पिघलता है
छोटा होता रहता है
या फिर कोई रोटी समझकर
हर दिन एक कौर खा जाता है
ना जाने कौन ?

मुखौटा

मुखौटा लगा चेहरे पे
चेहरा छुपाते हो
क्या बह रहे अश्कों को
हमसे छुपाते हो

हँसी चेहरे पे नकली है
और आँखों पे ये चश्मा
तुम हमको भूल जाने का
क्यों नाटक दिखाते हो

छुपाने से छुप जाते हैं
क्या अरमान ये दिल के
क्यों अपनी हैसियत को
हमसे छोटा बनाते हो

दिलों को जीतने का फ़न भी
सीखा किया होता
न अश्कों को छिपाने का
मौका मिला होता

मुखौटे उनको भाते हैं
जो हँसते और हँसाते हैं
कभी चेहरा दिखाते हैं
कभी चेहरा छुपाते हैं

मेरी यादें

कोई तो है जो मेरी यादों से खेला करता है
मुझे आईना बनाकर ख़ुद को देखा करता है
लिपट रही हैं कुछ मदमस्त हवाएँ मुझसे
संदेश ले जाती हैं
मेरे ही प्यार का मुझसे
ये कौन है जो मुझसे
इज़हारे-इश्क़ करता है
तोड़ कर रस्मों रिवाज के बन्धन
मेरी चाहत को पनाह में रखता है

चाँद को ग़ुरूर है

चाँद को ग़ुरूर है
कि चाँदनी उसी की है
दे रहा जो रोशनी
वो सामने आता नहीं

चमन को ये ग़ुरूर है
हर फ़िज़ा उसी की है
खिला रहा जो फूल है
वो नाम जतलाता नहीं

वक़्त की रफ़्तार

नामुमकिन है वक़्त की रफ़्तार रोकना
बहुत आये भी और गये भी इसी वहमो-ख़याल में

छोड़ देगा वक़्त बीच राह में तकदीर को
हम उड़ रहे हैं आज किस ख़्वाबो-ख़याल में

रास्ते रुकते नहीं रुकता है कारवां
मंज़िल मिलेगी आख़िरी कब्रो-मज़ार में

लफ़्ज़ों को इतने भी मोड़ ना दो
एक उम्र लगती है समझने में

तेरे कदमों में

ये जां गर सिर्फ़ हमारी होती
तेरे कदमों में डाल दी होती
बहुत टुकड़े हैं जिस्म के मेरे
हर टुकड़े में एक रिश्ता है

हम ख़ुद के कभी थे ही नहीं
हर टुकड़े में कोई रहता है
कहीं दर्द की है आह भरी
कहीं ग़म से समझौता है

कहीं मासूमियत के पर्दे हैं
कहीं फ़र्ज़ ने हमें जकड़ा है
हम ख़ुद के कभी थे ही नहीं
हर टुकड़े में कोई रहता है

मैं वो नहीं

मैं वो नहीं जो तुम समझते हो
मेरे कदमों के पीछे मत चलना
बहुत काँटे हैं मेरे पैरों में
मेरे निशां पे पैर मत रखना

हवा के झोंके हैं जो छू निकलते हैं
ख़ुशबू मेरी नहीं जो तुम महकते हो
मेरे कदमों के पीछे मत चलना
मैं वो नहीं जो तुम समझते हो

निशां मेरे जो रेत पर होंगे
वो रास्ते कहीं ख़त्म होंगे
उसे मुकाम मत समझना
तुम अपनी राह ख़ुद चुनना
मैं वो नहीं जो तुम समझते हो
मेरे कदमों के पीछे मत चलना

आशियाने बना लिये थे मैंने
बुत ख़्वाहिशों के सजाकर
वक़्त ने ढेर कर दिए सारे
रेत की आँधियाँ उड़ा-उड़ाकर

जादू था जिन निगाहों में
नज़र को बांधा था उन बलाओं ने
तुम उन नज़रों में मत बँधना
बहुत काँटे हैं मेरे पैरों में
मेरे निशां पे पैर मत रखना

मैं वो नहीं जो तुम समझते हो
मेरे कदमों के पीछे मत चलना
बहुत काँटे हैं मेरे पैरों में
मेरे निशां पे पैर मत रखना

क़ातिल

किसी क़ातिल को सज़ा-ए-मौत मत देना
बस ज़िन्दा रखना और मरने की आरज़ू देना

इश्क़ ने जब जनाज़े ग़म के उठाये
कब्र में दब के रह गए अरमान दिल के

दीये रौशन हों दिलों में इस तरह
हर रूह को उजाले मिल जायें
प्यार की छाँव में दीप ऐसे जलें
रौशन सब नज़ारे हो जाए

ख़यालों की कश्ती

ख़यालों की कश्ती में
अरमान ढो रही हूँ
साहिल को ढूँढ़ती हुई
माँझी को खो रही हूँ

बूँद बन गिरी हूँ सीप में
मोती बन के निखरी हूँ
बींध कर खुद की हस्ती
ये किस गले में जा सजी हूँ

बीते लम्हे

अब ना करना चर्चा मुझसे
बीते लम्हों की
मैं कुछ दीये बुझा के आई हूँ

सूरज की रौशनी से नहाकर
नया सूरज जगा के आई हूँ
चाँद जैसे हसीन सपने
अब नहीं दिखते
मैं कुछ सपने
सुला के आई हूँ
अब ना करना चर्चा मुझसे
बीते लम्हों की
मैं कुछ दीये बुझा के आई हूँ

अब कुछ रंग नये भरने हैं
सुबह के फूल थोड़े खिलने हैं
नया दीपक जला के आई हूँ
ये जो आसमां पे जमी धूल है ना
वो धूल हटा के आई हूँ
अब ना करना चर्चा मुझसे
पुराने लम्हों की
मैं कुछ दीये बुझा के आई हूँ

क़ातिल की नज़र

क़ातिल की नज़रों में झाँका था हमने
जलता-बुझता दीया सा नज़र आया था हमें
एहसास की गलियों में भटका हुआ
नफ़रत से जूझता शैतान पाया था हमने
इक आग थी अंगार थी दहक रही थी सीने में
क़ातिल की नज़रों में झाँका था हमने
जलता बुझता दीया सा नज़र आया था हमें

कुछ प्यास थी कुछ आस थी
कुछ बेमानी सी फ़रियाद थी
कहीं कुछ टूटता सा नज़र आया था हमें
क़ातिल की नज़रों में झाँका था हमने
जलता-बुझता दीया सा नज़र आया था हमें

एक मजबूरी थी सुबक रही थी कहीं
आग ज़रूरी थी दहक रही थी कहीं
हमने पत्थर को टूटता पाया था
क़ातिल की नज़रों में झाँका था हमने
जलता-बुझता दीया सा नज़र आया था हमें

क़त्ल के बाद वो अपाहिज था
बड़ा लाचार सा पाया था हमने
क़ातिल की नज़रों में झाँका था हमने
जलता-बुझता दीया सा नज़र आया था हमें

वो झाँकते हैं खिड़कियों से इस तरह से बार-बार
जैसे आज रात किसी का हो इन्तज़ार

पनाह दे मुझको

आँखों के झरोखे में पनाह दे मुझको
टूटा हुआ तारा हूँ आसमानों का
रौंदा हुआ जिस्म दर्द की आह में
मैं पर कटा पंछी हूँ बागवानों का

डूबते सूरज की ठंडी आग हूँ मैं
जिस्म की छाँव में सहारा दे मुझको
कफ़न ओढ़ के यहीं कहीं सो जाऊँगा
दिल की बस्ती में किनारा दे मुझको

कब्र आँसुओं से सींच देना कभी
फूल बनके जन्नत में मुस्कुरा लूँगा
दीया जलेगा मेरी रूह को चैन आएगा
जलती मोम हूँ पिघल तो जाऊँगा

ये ख़्वाब

ये ख़्वाब सजा कर क्यों रखे हैं
चलो पहन लें इनको
रात में कुछ देर टहल आएँगे
जन्नत की वादियों में
हाथ पकड़े तुम्हारा
दूर तक जहाँ कोई ना हो
सिर्फ़ मैं और तुम
भीगी रातों के यह ख़्वाब
सहेज कर रखना
उधड़ जाएँगे दिन होते ही
सवेरा इन्हें कहाँ सुहाता है

फ़ना हो जायेंगे

फ़ना हो जायेंगे पल-पल
जल-जल के हम इक दिन
बाती रह जायेगी काली
शमां बुझ जाएगी इक दिन

रौशन रातों की
रौशनी के साये में
अँधेरे दूर करके बुझ गए
रौशन सवेरे में

सूरज क्या जाने रात को
कैसे सँभाला है
जल-जल के हमने रात को
रौशन बनाया है

इश्क़ की रूह

इश्क़ की रूह नहीं मरती
जिस्म मर जाते हैं
डूबने वालों के इसमें
दम ही निकल जाते हैं

गली–गली भटकती है
इश्क़ की रूह
नये जिस्म तलाशती है
इश्क़ की रूह
इश्क़ फिर परवान चढ़ते हैं
इश्क़ को नये आयाम मिलते हैं
वादियों में गुनगुनाते हैं
फिर से भँवरे
फूलों से खुशबू ढूँढ़ लाते हैं
फिर से भँवरे

लगन

लगन लगी प्रीत में कैसी
दूजो ना मन भाये रे
आस प्यास में हुऐ बावरे
नैना रोग लगाये रे

नीर बहाये दो नैना
सागर उतरे नैनन में
तक-तक नैना फिर भी प्यासे
आग लगाये सावन में

शौक़ मुझे भी ना था शोर मचाने का
कोई ख़ामोशी को ना समझे तो फिर क्या करें

अल्फ़ाज़ दिल के

अल्फ़ाज़ दिल के
मुझे दिल ही में खा जाते हैं
क्यों भिड़ते हैं हम तन्हाई में
अपने आप से

क्यों बिखर जाते हैं
काग़ज़ के टुकड़ों की तरह
कोशिश तो हो
सिमटकर खड़े हो जाने की
ख़ुद को अपना ख़ुदा बनाने की

रूठना

रूठना तो बार-बार
ये मेरी अदा है
वो मनाना तो सीखे
जो मेरा ख़ुदा है

हसीन आँखों ने बुन लिए इतने ख़्वाब गोया
मानो हम सा हसीन जहां में कोई और ना हुआ

किसी की आग में जलना तबाह हो जाना
इंसां की फ़ितरत है राख हो जाना

तुम मेरी रूह में समा जाओ समन्दर बनकर
मुझे आता नहीं क़श्ती को किनारे लाना

गुज़र गए हैं ख़्वाब इशारा करके
पूरे हो जायेंगे चले आना पीछे-पीछे

न जाने क्यों

न जाने क्यों ज़िंदगी से मलाल रखे हैं
ज़िंदगी ने कुछ ग़म भी पाल रखे हैं
जाने क्यों दीये बुझा दिये आँगन के
और शोले आग के अन्दर जला रखे हैं

आँधियों से जूझना कोई ज़रूरी था क्या
दरवाज़े पर साँकल तो लगा लिए होते
राहगुज़र अपने बना लिए कितने
और अपनो से ही गिले बना रखे हैं

हद से गुज़र जाने की भी हद होती है
तुमने तो समंदर ही लांघ रखे हैं
इतनी दूर भी कोई जाता है क्या
तुमने हर क़श्ती में पाँव जमा रखे हैं

कहा था ना

मत पकड़ो हवाओं का आँचल
जिस दिन ये तूफ़ान बनेंगी
कहीं का नहीं छोड़ेंगी
तुम्हीं ने चाहा था
हवाओं संग उड़ना
हवाओं में भटकना अच्छा नहीं
उड़ान की एक हद होती है
ज़्यादा ऊँचाई
कहाँ रास आती है

वो खड़े थे क्यों महफ़िल में तमाशाई बनकर
क्यों वफ़ा को हमारी वो ज़ार-ज़ार करते हैं

कड़वी यादें

क्या करें कड़वी सी यादों का
जो ज़िन्दा हैं अब तलक
ज़हन में यादों का
पुलिंदा है अब तलक

ज़हर घोलता है
दिन-ब-दिन सीने में
बाज़ की तरह उड़ता
परिन्दा है अब तलक

घूँट-घूँट हलक में
उतरता हलाहल है
ज़ख़्म कुरेदता
बाशिन्दा है अब तलक

डाका डालता जकड़ता
शिकंजा है अब तलक

क्या करें उन कड़वी सी यादों का
जो ज़िन्दा हैं अब तलक
ज़हन में यादों का
पुलिंदा हैं अब तलक

नयन बोले मन सुने

नयन बोले मन सुने
है प्रीत लागी दिल कहे
बावरा है मन ये पंछी
काहे उड़ता है फिरे

क्यों लगन लागी हिया से
प्रीत लागी है पिया से
नैन उलझे इस जिया से
किसे नैन ढूँढ़ें बावरे
बावरा है मन ये पंछी
काहे उड़ता है फिरे

अकुलाये बीते न पल
रैन-दिन ये बावरे
रैन आँखों में कटे
किसे कहूँ मैं साँवरे
बावरा है मन ये पंछी
काहे उड़ता है फिरे

जा रे मन अब देर ना कर
संदेश ले जा बावरे

बिन कहे तू जा के कह
नैनन की भाषा आ पढ़े
बावरा है मन ये पंछी
काहे उड़ता है फिरे

नयन बोले मन सुने
है प्रीत लागी दिल कहे
बावरा है मन ये पंछी
काहे उड़ता है फिरे

जीने के अन्दाज़

ज़िंदगी तू जीने के अन्दाज़ बदल दे
ख़ुशी के आँसू हैं ये अब तू बात बदल दे
बहुत रूलाया है अब तो हँसाने पे आजा
अभी मुकाम बाकी है अब तो राह बदल दे

आँधियाँ

पैरों के निशां रेत पर टिकते नहीं
तुम आँधियाँ रोक सको तो कुछ बात बने

बड़ी उलझन है पीछे-पीछे चलने में
कदम से कदम मिला सको तो कुछ बात बने

दिल से निकलेंगे लफ़्ज़ तो ज़ुबां पे उतर आयेंगे
तुम हाथ में हाथ लो तो कुछ बात बने

ये दर्दे दिल भी अपना
अब किसको कहेंगे जाकर
जो अपने थे कभी वो आज
तमाशा देखते हैं आकर

ज़िंदगी के लिए

बहुत जला हूँ बहुत रोया हूँ इस ज़िंदगी के लिए
बहुत भागा हूँ बहुत थका हूँ इस ज़िंदगी के लिए

मेरी ज़िंदगी मुझसे वफ़ा कर न सकेगी
ले जाएगी इक दिन कब्र के वीराने में

ये साये भी साथ क्या निभाएँगे
जब मैं ही नहीं तो मेरे क्या हो पाएँगे

बस एक दीया है जो अंत तक साथ निभाएगा
रोज़ मज़ार पे कोई तो जला आएगा

पत्तों की सरसराहट कुछ गुनगुनाएगी
तन्हाई के आलम में चैन की नींद तो आएगी

आईना जोड़ के

आईना जोड़ के जो तस्वीर देखी हमने
बड़े हिस्सों में नज़र आये हम
चाहतें अधूरी थीं ख़्वाब भी अधूरे थे
बड़े बेबस से नज़र आये हम
आईना जोड़ के जो तस्वीर देखी हमने
बड़े हिस्सों में नज़र आये हम

आसमां से गिरते सितारों में रौशनी कहाँ
बड़े धुँधले से नज़र आये हम
चाँद छूने की तमन्ना लेकर
आसमां से गिरते नज़र आये हम
आईना जोड़ के जो तस्वीर देखी
बड़े हिस्सों में नज़र आये हम

इश्क़ निक्कमा

कौन कहता है इश्क़ निक्कमा है यारो
इश्क़ का अंजाम सिर्फ़ मरना है यारो
ये वो कहते हैं जो इश्क़ में बदनाम हैं
मेरे लिए तो इश्क़ ही मुकाम है

ना तोड़ पुराने रिश्तों को
बड़ी मंहगी पड़ेगी वापसी तेरी

रंग

रँगूँ पिया मैं रंग तोरे
तुम मेरे रंग रँग जाओ
राधा औ कान्हा के जैसे
मीत प्रीत के बन जाओ

होली के रंगों से प्रीतम
तन-मन मेरा नहला दो
रंग-सुगंध हवा में महके
चुनर प्यार की पहना दो

भर पिचकारी रंग दो रसिया
आज ना आयो लाज मोहे
अंग गुलाल से लाल भये
सजना ना आयो बाज मोरे

हार सिंगार सब बिखर गये
करियो जो जोरा-जोरी तुम
मैं राधा तुम कृष्ण भयो
खेलो जो आँखमिचौली तुम

मटकी सिर पे तुम फोड़ गयो
रंगों के रंग निचोड़ गयो
पक्को रंग न उतरे अब
ये कैसी होली खेल गयो

वक़्त ने मुझसे कहा

वक़्त ने मुझसे कहा
इन्तज़ार ना कर मेरा
इन्तज़ार कर उसका
जो छोड़े ना हाथ तेरा

मैं तो तुझसे
आगे निकल जाऊँगा
कभी थोड़ी ख़ुशी देकर
कभी थोड़ा ग़म देकर
एक दिन तुझको
तन्हा छोड़ जाऊँगा

दिल की आवाज़

किस दिल की आवाज़ सुनूँ मैं
किस दिल से मैं बात करूँ
किस दिल को अपना मानूँ
और किस दिल से फ़रियाद करूँ

ये मैं और ये मेरा दिल
मुझसे ही उलझा जाता है
सागर की लहरों सा उठकर
सागर में वापस आता है

आसमान में रोज़ एक
पतंग नयी उड़ाता है
पेंच से पेंच लड़ाकर के
वापस ज़मीन पर आता है

इन्द्रधनुष ले हाथों में
बादल सा इतराता है
भीनी सुगन्ध में मौसम की
हवा सा उड़ता जाता है

बरसात का मौसम

ये पानी टप-टप करके जाने क्या कहता है
यादों के घने जंगल में बस बरसता रहता है
फूलों की तरह यादें भी महकने लगी हैं आजकल
दिल में उम्मीदें फिर से जगने लगी हैं आजकल
ज़हन में कुछ ख़याल यूँ ही उमड़ने लग गये
बादलों के साथ यूँ ही घुमड़ने लग गये
आँधियाँ तो सब उड़ा के ले गईं थी
जो बच गये थे ख़्वाब वो अब बरसने लग गये

चाँद रूठा है

चाँद रूठा है नहीं आया मना लूँ जाकर
बादल ओढ़ के सोया है जगा लूँ जाकर

बात रात की है रात ही में ख़त्म हो जाएगी
सुबह की रौशनी सूरज को ढूँढ़ लाएंगी

रूबरू धरती के दोनों तो ना हो पाएंगे
एक रूठा है तो दूसरे को मना लायेंगे

ये भागमभाग खेल है ज़िंदगी दिखाना होगा
एक आया है तो दूसरे को तो जाना होगा

वक़्त के धागे

अब कुरेदने से हासिल है क्या
ज़ख़्म तो सिल गये हैं वक़्त के धागों से

रूह को तो आराम से रहने दो
रूह ने छोड़ा है जिस्म इन्हीं इरादों से

ये किसकी आह निकली कौन क़ातिल था
हम चुप रह गये ये किसके वादों से

तमाम उम्र हम भी कहाँ जी सके
जान कहाँ बची थी उसकी निगाहों से

आग जल के धुआँ जब उगलती रही
हम राख बन उड़ते रहे आँधियों से

हम बेनक़ाब हुए थे बेवफ़ा बनकर
वो नक़ाब ओढ़कर निकले अँधेरी गलियों से

ज़िंदगी

ज़िंदगी जब ज़िंदगी से
हारती है
मौत उसे प्यार से
दुलारती है
चल पड़ी कंधों उठाये
बोझ को
इक नए जामे से फिर
सँवारती है
कर्म तराज़ू में
तोले जाते हैं
पिछले हिसाब फिर
टटोले जाते हैं
देह को फिर से
सँवारा जाता है
फिर नयी दुनिया में
लाया जाता है
चक्र जीवन-मौत का
जब तक चलेगा
रूह को जामा नया
मिलता रहेगा

अमावस

आज की रात चाँद बहुत रोया था क्या?
सुबह हर फूल पर आँसू ही आँसू बिख़रे थे
रात आधी थी तब चाँद भी आधा था
ठंड में ठिठुरा होगा तभी तो सिकुड़ा होगा
चाँद से कहना आज बादल ओढ़ कर सोये
रात लम्बी है ठंड और भी ज़्यादा है

हद हो गयी आज, अमावस की रात चाँद ग़ायब है
ना जाने किसके आँगन में सोया होगा
किसी ने गोबर के उपले जलाये होंगे
धीरे-धीरे बदन खुलेगा
पूरनमासी तक
फिर अपने रूप में आयेगा चमकेगा रौशनी देगा
अमावस कितनी देर तक टिक पायेगी
आख़िर उसे जाना होगा
अमावस को जाना होगा

चलना है मुझको

चलना है मुझको तो और चलना है
दीये की लौ में रौशन ख़ुदी को करना है
चलना है मुझको तो और चलना है

बदल ना पाऊँ जहां को तो ख़ुद बदलना है
मुझको तो इंसानियत में और ढलना है
चलना है मुझको तो और चलना है

ख़्वाहिशें लाखों मगर सँभल कर के
रंजिशें लाखों मगर दफ़न कर के
रातों में जुगनुओं की तरह चमकना है
चलना है मुझको तो और चलना है

कुछ सपने अधूरे से

कुछ सपने अधूरे से
जो शायद पूरे ना भी हों
उन सपनों में ही जी लेना
ये भी तो कुछ कम नहीं

ढेर ख़्वाहिशों का मंज़र
ये इंसानी फ़ितरत है
इनमें आकाश को छू लेना
ये भी तो कुछ कम नहीं

पंछी की तरह उड़ लेना
बेशक हो नामुमकिन पर
सपनों को पँख लगा लेना
ये भी तो कुछ कम नहीं

इस अनजान सी दुनिया में
हर सपना भी अपना नहीं
किसी एक को अपनाकर
सब न्यौछावर कर देना
ये भी तो कुछ कम नहीं
ये भी तो कुछ कम नहीं

प्रेम-प्यार की नदिया

प्रेम-प्यार की नदिया में
चलती रिश्तों की नाव
अब वो नदिया सूख रही
कौनो ना इसे बचाव
कौनो ना इसे बचाव
करो प्रभु जतन कुछ ऐसा
फिर से बह निकले इसमें
जल निर्मल वैसा

नाव भरी रिश्तों से
कुछ भारी थी जैसी
फिर भी बहती थी
नदिया की धार में ऐसी
कुछ सम्मानित रिश्तों ने
पकड़े थे चप्पू
सँभल-सँभल के नई दिशा
पकड़े थे अप्पू

ना जाने इसमें किसने
फिर छेद किया
ना जाने किस कचरे ने

जल सोख़ लिया
ना जल रहा ना नाव
बिख़र गए सब रिश्ते
ज़हर घुल गया ऐसा
रहे ना फिर फ़रिश्ते

रात

ख़्वाब तो साहेब अब
दिन में बसर करते हैं
रातों में तो लोग अब
सड़कों पर सफ़र करते हैं
होता था रातों में कभी
नींद का बसेरा
अब तो होता है
रातों को सवेरा

ख़ुशबू

घुल जाती है साँसों में जब तेरी ख़ुशबू
रूह से रूह मिल जाती है जैसे रूबरू

प्यार का सागर दिल में सिमटता है कहीं
आँखों से समंदर थोड़ा सा छलकता है कहीं

सिलसिला इसका थम ना जाए कहीं
जाम हाथों से छलक ना जाए कहीं

नशा है प्यार का बह ना जाए कहीं
नशा है यार का उतर ना जाए कहीं

घुल जाती है साँसों में जब तेरी ख़ुशबू
रूह से रूह मिल जाती है जैसे रूबरू

तूफ़ान दिल में

उठ रहा
तूफ़ान दिल में
छा रही हैं आँधियाँ
आँखें हैं बोझिल दूर तक
दिख रही रुसवाइयाँ

ज़िंदगी चाही थी जो
वो ज़िंदगी मिली कहाँ
आग फ़ैली है दिलों में
दूर तक उठता धुआँ

शबनम की बूँदों तुम ज़रा
गिर पड़ो आकाश से
अंगारों से दहकी आग है
ठंडी करो तुम प्यास ये

उठ रहा तूफ़ान दिल में
छा रही हैं आँधियाँ
आँखें हैं बोझिल दूर तक
दिख रही रुसवाइयाँ

धुआँ उठा है

धुआँ उठा है कहीं आग सुलग रही होगी
दिल में मेरी याद जल रही होगी

ख़ुशबू तो आई थी तेरे घर से पैगाम लेकर
तू भी आती ज़रूर पर आँधियों से डर रही होगी

मुसाफ़िरों के ठिकाने नहीं हुआ करते
पर तू यक़ीनन राह भटक गई होगी

तिनका-तिनका जोड़ के आशियाने तो बनाए होंगे
हम से मिलने की आस भी लगाई होगी

ख़ुदा कसम सुनते तो लौट लिए होते
जानता हूँ तूने आवाज़ तो लगाई होगी

मैं भी थक हार कर बैठा हूँ ना जाने कब से
चोट वक़्त ने तुम्हें भी पहुँचाई होगी

धुआँ उठा है कहीं आग सुलग रही होगी
दिल में मेरी याद जल रही होगी

ये धड़कनें

ये धड़कनें दीवानी हुई जाती हैं
साँस रुक जाए गर धड़कन को रोक ले कोई
क्यों ज़िंदगी को इस तरह रुसवा कर दें
यूँ दिल पे गर नाम लिख जाए कोई

ये राज किस को बतलाएँ दिल के
ये दिल जो बेगाना हुआ जाता है
इस तरह उलझन को सुलझाएँ कैसे
जो इसमें ही डूबा चला जाता है

तेरे क़दम

कहीं तो तेरे क़दमों के निशां
पड़े होंगे
कभी तो तेरे साए से
घिरे होंगे
ढूँढ़ लूंगा अपनी हस्ती
इनमें ही कहीं
तेरी बस्ती में मेरे प्यार की
आज़माइश ही सही

आँधियाँ अन्दर हैं तो

आँधियाँ अन्दर हैं तो बाहर निकलूँ कैसे
सैलाब तो बाहर भी है तो रोकूँ कैसे

ये तूफ़ान निगल लेता है तेरी यादें
तुझको दिल में उतारूँ कैसे

जिस वक़्त ने तुमको चुराया है मुझसे
उस वक़्त को ढूँढ़ के लाऊँ कैसे

शमां जलती है तो परवाना भी जल जाता है
ये बात इस परवाने को समझाऊँ कैसे

आँधियाँ अन्दर हैं तो बाहर निकलूँ कैसे
सैलाब अन्दर है तो रोकूँ कैसे

ज़ख़्म गहरे हैं दवा से जलन होती है
ये ज़ख़्म दिल से लगाऊँ कैसे

जले पे दुनिया नमक छिड़कती है
इस आग से खुद को बचाऊँ कैसे

आँधियाँ अन्दर हैं तो बाहर निकलूँ कैसे
सैलाब बाहर भी है तो रोकूँ कैसे

ये सिलसिला

ये सिलसिला अब नहीं थमता
भीड़ में दिल नहीं रमता
हमने खोए हैं
दिले यार इसी महफ़िल में
इन बहारों में दिल नहीं जमता
ये सिलसिला अब नहीं थमता

ज़िक्र आया है तो होश भी आया है हमें
दिल मदहोश था अब नहीं रहता
बिन पिए ही जाम भरते रहे हम
आशिक़ी में
अश्क़ का सैलाब अब नहीं रुकता
यह सिलसिला अब नहीं थमता

वह क़ातिल थे क़त्ल कर गए
दिलो जिगर को ख़ाली कर गए
जिस्म का मोल अब नहीं लगता
यह सिलसिला अब नहीं थमता
भीड़ में दिल अब नहीं रमता

ख़्वाबों की दुनिया

ख़्वाबों की दुनिया बड़ी बेशर्म है
डूब के इसमें कभी आती शर्म है
मैं वो कर हूँ गुज़रा जो करता नहीं हूँ
निगाहों से जैसे गुज़रता नहीं हूँ

दिल में छाई हो जैसी भी मस्ती
आसमां की डाली पे चाँद की हस्ती
हक़ीक़त की दुनिया उलझी पड़ी है
ग़मों से घिरी कमबख़्त ज़िंदगी है

इन दीवारों ने बांध दिया मुझको
लांघ कर जाऊँ तो ख़ता होती है
दिल–ए–नादान को समझाऊँ कैसे
क्यों मुझसे मौहब्बत ख़फ़ा होती है

चाँद से इश्क़

चाँद से इश्क़
ये कैसा जुनून है
तन्हाईयों से इश्क़
ये कैसा सुकून है
मौहब्बत की लौ जब
जले अँधेरों में
मर जाएँ परवानें
ये कैसा कानून है

तेरी झुकती नज़रें

तेरी झुकती नज़रों में
हया कि चिलमन में
छुपती सी निगाहें
मुझे अच्छी लगती हैं
ना जाने क्यों मुझे अच्छी लगती हैं

गुलाब की कलियाँ
जब खिलती हैं लब पर
वो खिलती सी कलियाँ
मुझे अच्छी लगती हैं
ना जाने क्यों मुझे अच्छी लगती हैं

तेरे काँपते लबों पर
ख़ामोशी से भरी बातें
मुझे अच्छी लगती हैं
हाँ मुझे अच्छी लगती हैं
ना जाने क्यों मुझे अच्छी लगती हैं

तेरे तपते बदन पर
बारिश की बूंदें
ये हुस्न की तड़पन
मुझे अच्छी लगती हैं
ना जाने क्यों मुझे अच्छी लगती हैं

सावन की पहली बारिश

सावन की पहली बारिश में
मुझे याद बहुत आई हो तुम
मुझे याद बहुत आई हो तुम
जब फूलों सी मुस्काई थी
मुझे याद बहुत आई हो तुम

हरी-भरी इस धरती पर
आँगन में धूप उतरने पर
जब आँचल लहराई थी तुम
मुझे याद बहुत आई हो तुम
सावन की पहली बारिश में
मुझे याद बहुत आई हो तुम

भीगी मिट्टी भीगा आँगन
रपट के तेरा गिर जाना
हाथ बढ़ा मेरा तुझको
आगोश में अपने ले लेना
शर्मा के अपना चेहरा
हाथों से यूँ ढक लेना
मुझे याद बहुत आई हो तुम

सावन की पहली बारिश में
मुझे याद बहुत आई हो तुम

तन्हा हूँ फिर भी साथ हो तुम
दिल के मेरे पास हो तुम
जैसे मंद-मंद मुस्काई हो तुम
मुझे याद बहुत आई हो तुम

सावन की पहली बारिश में
मुझे याद बहुत आई हो तुम

सहारा

सहारा देकर मुझे पंगु ना बना
पंख उगा लूँगा धीरे-धीरे
सितारों संग खेलना है मुझको
काँच बिखरे हैं चुन लूँगा धीरे-धीरे

आसमां मुट्ठी में कर लूँगा
नया चाँद उगाऊँगा इक दिन
अचानक इक रोज तेरे सामने आ जाऊँगा
रह भी नहीं पाऊँगा तुम बिन

इश्क़ में घायल

इश्क़ में घायल हूँ मैं
ढूँढ़ता अपना जहां
दीवानगी की राह में
होश में हूँ मैं कहाँ

सुर लगा आवाज़ में
ये राग मेरे प्यार के
साँसों से सरगम गाऊँ मैं
पर गीत तेरे प्यार के

तू मुझको मेरी हस्ती से
मिला दे है मेरा प्यार तू
ये साज़ मेरे दिल का है
आवाज़ मेरी तू ही तू

तू बता मुझको ज़रा
मैं राह पकडूँ कौन सी
चलना मुझे तेरे साथ है
तेरा प्यार मेरी ज़िंदगी

इश्क़ में घायल हुआ
मैं ढूँढ़ता अपना जहां
दीवानगी की राह में
होश में हूँ मैं कहाँ

तमाशा-ए-सराब

तमाशा-ए-सराब है क्यों रोज़ भटकाती है मुझे
दूर निगाहों से कुछ और नज़र आती है मुझे
जो मिल ना पाएगा उसके पीछे भी भागूँ क्या
यह मृगतृष्णा है धोखा दे जाती है मुझे
तमाशा-ए-सराब है क्यों रोज भटकाती है मुझे

चल बैठ जो मिला है उसी में जी लें
क्यों भागें रह जाएगा यह भी पीछे
फिर पछताने से कुछ हासिल नहीं होगा
जाम यहीं पर ख़ुशी के पी लें

ये मिराज नए दृश्य दिखलाती है मुझे
जो नहीं है उसके लिए ललचाती है मुझे
यह मृगतृष्णा है रोज भटकाती है मुझे

प्यास बुझा ना पाएगी ये रेत, ये बंजर जमीं
तमाशा-ए-सराब है न करना इस पे यकीं
चल किसी और नई राह ढूँढ़ लें कहीं
या चल एक तालाब कोई और खोज लें कहीं
तमाशा-ए-सराब है क्यों रोज भटकाती है मुझे
दूर निगाहों से राह गीली सी नज़र आती है मुझे

सराब का अर्थ–मृगतृष्णा

सारे ग़म बह निकले हैं

सारे ग़म बह निकले हैं
यूँ ही तो बाढ़ नहीं आई
सूख गया है मन-मंज़र
अब ना किसी से रुसवाई

सूखे पत्तों सा उड़कर के
ना जाने अब पाँव पड़े कहाँ
कितने सागर हैं पार किये
अब लोक-लाज का होश कहाँ

सूखा मन सूखा चितवन है
सूखा-सूखा सा आँगन है
सूखे-सूखे से फूल खिले
अब गीत कहाँ मनभावन हैं

सारे ग़म बह निकले हैं
यूँ ही तो बाढ़ नहीं आई
सूख गया है मन-मंज़र
अब ना किसी से रुसवाई

इश्क़ इबादत

इश्क़ की इबादत कोई जुर्म तो नहीं
एक बुत बाहर है एक अंदर, कोई जुर्म तो नहीं

मेरे दिल में भी बहारों के बाग़बां हैं
सजा लूँ उनको भी कोई जुर्म तो नहीं

उसकी तस्वीर ने दिल बहारां किया मेरा
सामने बिठा लूँ कोई जुर्म तो नहीं

ख़ामोशी को तोड़ा है उसकी नज़रों ने
गुफ़्तगू नज़रों से हो जाए कोई जुर्म तो नहीं

आज़ाद पंछी को बाँधा है उसने पिंजरे में
मैं दिल में क़ैद कर लूँ कोई जुर्म तो नहीं

चाँद तक पहुँच जाएगी दास्तां अपनी
पन्नों पे बिखेर दूँ कोई जुर्म तो नहीं

हवाएँ रोज़ उड़ा देती हैं आँचल उसका
समेट लूँ बाहों में कोई जुर्म तो नहीं

इश्क़ की इबादत कोई जुर्म तो नहीं
एक बुत बाहर है एक अंदर, कोई जुर्म तो नहीं

बिकता है जहां में

बिकता है जहां में दर्द ख़रीदार हम हैं
किसी को क्या कहें जब गुनहगार हम हैं

इश्क़ में वादे ना निभाए कोई
कहने को बेवफ़ाई के तलबगार हम हैं

जान लेकर वो चल दिए ना जाने किधर
मौत के लिए आज बेक़रार हम हैं

ज़ुबां पे आते-आते रह गए वादे कितने
इश्क़ में सुलगते हुए अंगार हम हैं

वफ़ा के नाम पर कुछ अश्क़ बहा दिए होते
इन्हें मोती बनाने के फ़नकार हम हैं

आँसू

बहुत आँसू जमा किए हैं मैंने
चल बैठ थोड़ी प्यास बुझा लेते हैं
लबों पर गिरते हैं जब बूंद-बूंद
हलक में उतर जाते हैं घूँट-घूँट
सारी क़ायनात नमकीन नज़र आती है
समंदर की लहरों में जैसे समा जाती है
बहुत आँसू जमा किए हैं मैंने
चल बैठ थोड़ी प्यास बुझा लेते हैं

नज़र उठा तू भी कुछ कह दे
चल आज ज़िक्र तू भी कुछ कर दे
ज़माने ने सितम तुझ पर ढाये होंगे
कुछ आँसू तूने भी बहाए होंगे
समंदर में डुबकी लगाई होगी
कुछ मोती तो चुराए होंगे
चल कुछ मोती बाँट लेते हैं
तू अपनी सुना हम तेरी सुन लेते हैं
बहुत आँसू जमा किए हैं मैंने
चल बैठ थोड़ी प्यास बुझा लेते हैं
लबों पर गिरते हैं जब बूंद-बूंद
हलक में उतर जाते हैं घूँट-घूँट

कुछ आँचल में समेट लेते हैं
अपनी प्यास बुझा लेते हैं
बहुत आँसू जमा किए हैं मैंने
चल बैठ थोड़ी प्यास बुझा लेते हैं

हमराज़

ये दर्द है हमराज़ है हमारा है
सब जानता है चुभन है कहाँ
दिल चीर के भी रख दें
छुपा लेगा ज़ख़्मों के निशां

ग़म से नाता है, पुराना है
चोट से रिश्ता है, निभाना है
दर्द पीकर जो मुस्कराते हैं
जहां में वही तो जी पाते हैं

अपनी ही धरती पे

अपनी ही धरती पे
आग लगा आये हो
अपने ही आँगन में
नफ़रत फ़ैला आये हो

मत करो यक़ीं अफ़वाहों पे
देखो सबकुछ
अपना ही
जला आये हो
इसकी भरपाई
तुम्हें ही करनी होगी
अपने ख़्वाबों की
मय्यत उठानी होगी

गीली माटी बर्तन-सी मैं

गीली माटी बर्तन-सी मैं
घूम रही हूँ चाक-सी मैं
कौन घुमाने वाला मुझको
मिट्टी-सी औकात मैं

मिट्टी तन और मिट्टी मन
सपने सूखे मिट्टी बन
चाक चढ़ूँ और फिर बन जाऊँ
मिट्टी की सौगात मैं

फूल सजाऊँ अपने तन
खुशबू फ़ैलाऊँ आँगन मैं
जब टूटूँ मिट्टी बन जाऊँ
मिट्टी-सी औकात मैं